विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, वैशाख पूर्णिमा, 25 मई, 2013 वर्ष 42 अंक 12

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना।
पूजा च पूजनेय्यानं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥

दुर्जनों की संगति से बचना, संतों की संगति करना और पूजनीय गुरुजनों का पूजन-वंदन करना, ये उत्तम मंगल हैं!

मङ्गलसुत्त- १, खुद्दकपाठो

कृतज्ञ हैं

परम आदरणीय गुरुदेव!

आप का मंगलमय सान्निध्य आज भी महसूस होते रहता है। धर्म का सान्निध्य है तो आप का सान्निध्य है ही। धर्म का सान्निध्य बना रहे ताकि आपका मंगलमय सान्निध्य बना रहे। यही शिव-संकल्प है।

कितना मंगलमय है आप का सान्निध्य! धर्म का सान्निध्य! जब-जब धर्म-सान्निध्य होता है तब-तब आप की असीम करुणा का स्मरण हो आता है और मन कृतज्ञता व रोमांच-पुलक से भर उठता है।

मन कृतज्ञता से भर उठता है- उन भगवान **सम्यक् संबुद्ध शाक्यमुनि गौतम** के प्रति, जिन्होंने असंख्य जन्मों तक साधनामय जीवन जीते हुए दसों पुण्य-पारमिताओं को परिपूर्ण किया जिससे कि न केवल अपनी स्वस्ति-मुक्ति साध सके, बल्कि अनेकों की स्वस्ति-मुक्ति का कारण बने। ऐसी कल्याणकारी विद्या खोज निकाली जिसे कि जीवन भर करुणचित्त से मुक्तहस्त बांटते रहे, जिससे अगणित लोगों का मंगल सधा।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है- उन **जीवनमुक्त अर्हन्तों** के प्रति जिन्होंने यह कल्याणकारी विद्या भगवान से प्राप्त कर *"चरथ भिक्खवे चारिकं, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानु-कम्पाय"* के मंगल आदेश को शिरोधार्य कर गांव-गांव, नगर-नगर जनपद-जनपद इस मुक्तिदायिनी विद्या को बांटने में अपना जीवन लगा दिया।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है- उन सभी **सत्पुरुषों** के प्रति जिन्होंने इस पावन धर्म-गंगा को अनेक पीढ़ियों तक प्रवहमान बनाये रखा।

कृतज्ञता से मन भर उठता है- उन **अर्हत सोण** और **उत्तर** के प्रति जो विदेश-यात्रा के सभी संकटों को झेलते हुए भगीरथ की तरह इस धर्मगंगा को स्वर्णभूमि ले गये और अगणित प्यासों की प्यास बुझायी।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है- उन परंपरागत **धर्म-आचार्यों** के प्रति जिन्होंने ब्रह्मदेश में गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा इस विद्या को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने शुद्ध रूप में कायम रखा। इसमें शब्दों का, रंग-रूप का, आकृति, कल्पनाओं आदि का सम्मिश्रण नहीं होने दिया। जो पथ स्थूल भासमान सत्य का भेदन करता हुआ सूक्ष्मतम परम सत्य की ओर ले जाने वाला राजपथ है, उसे एक स्थूल भासमान सत्य से दूसरे स्थूल भासमान सत्य की ओर ले जाने वाली अंधी गली नहीं बनाया। शुद्ध रूप में रखा तो ही हमें शुद्ध रूप में यह विद्या प्राप्त हुई।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है- इस पुनीत आचार्य-परंपरा के पिछली सदी के जाज्वल्यमान नक्षत्र **लैडी सयाडो** के प्रति और सद्गृहस्थ आचार्य सयातैजी के प्रति जिन्होंने इस उत्तरदायित्व को इतने आदर्शरूप से निभाया।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है- गुरुदेव! आपके प्रति, आपने इतने करुणचित्त से इस अनमोल धर्मरत्न का दान दिया। यदि यह धर्मरत्न न पाता तो मेरी क्या दशा होती? धन-दौलत के संचय-संग्रह और सामाजिक पद-प्रतिष्ठा की होड़-दौड़ में ही जीवन खो देता। धर्म की ओर झुकाव होता भी तो किसी संप्रदाय की बेड़ियों को ही आभूषण माने रहता। परायी अनुभूतियों के गर्व-गुमान में ही जीवन बिता देता। सत्य-धर्म की प्रत्यक्षानुभूति वाला यह सम्यक्दर्शन कहां उपलब्ध होता? कल्पनाओं को ही सम्यक्दर्शन मानकर संतुष्ट हो लेता। यथाभूत दर्शन द्वारा सम्यकज्ञान कहाँ उपलब्ध होता? बौद्धिक ऊहापोह को ही सम्यकज्ञान मानकर जीवन खो देता। कर्मकांड, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन अथवा स्वानुभूति-विहीन मत-मतांतरीय दार्शनिक मान्यताओं की जकड़न में अनमोल मनुष्य जीवन गँवा देता। आपने यह अनुत्तर-अनुपम धर्मदान देकर मानव-जीवन सफल कर दिया गुरुदेव!

सचमुच, अनुत्तर-अनुपम ही है यह धर्म-साधना! कितनी ऋजु, कितनी स्पष्ट, कितनी वैज्ञानिक, कितनी मांगलिक! बंधन से मुक्ति की ओर ले जाने वाली, माया-मरीचिका से निर्भ्रांति की ओर ले जाने वाली! भासमान प्रकट सत्य से परमसत्य की ओर ले जाने वाली! ऐसी अनमोल निधि की निर्मलता अपने शुद्ध-रूप में कायम रहे, आज के इस पुण्य-दिवस पर मेरा यही शिव-संकल्प है। कहीं किसी प्रकार के सम्मिश्रण की भूल कर हिमालय जैसा बड़ा अपराध न हो जाय! यह अनमोल निधि अपने निष्कलुषरूप में कायम रहे और इसके अभ्यास द्वारा जन-जन की मुक्ति के लिए अमृत का द्वार खुले, इसी में आप का सही पूजन-वंदन, आदर-सम्मान समाया हुआ है।

विनीत धर्मपुत्र,
सत्यनारायण गोयन्का

एक जिज्ञासा

यह जिज्ञासा लगभग सभी के मन में समायी रहती है कि वह कौन है जो जन्मने पर हमारी मृत्यु निश्चित करता है और मरने पर पुनर्जन्म देता है? अधिकतर लोग उसे ईश्वर के रूप में मानते हैं। वह ईश्वर है जो हमें जन्म देता है और मृत्यु तक पहुँचाता है और फिर जन्म देता है। बुद्ध के पहले भी ऐसे प्रश्न उठते थे, बुद्ध के समय भी और बुद्ध के बाद भी। बुद्ध के बाद का एक भारतीय संत कहता है - **'पुनरपि जननम्, पुनरपि मरणम्, पुनरपि जननी जठरे शयनम्'।** वह औरों की तरह अपने परमात्मा, मुरारि से प्रार्थना करता है-- **'पाहि मुरारे...'** -- मुझे इस भव-संसरण से बाहर करो।

बुद्ध ने भी इस सच्चाई को जानने के लिए, इस समस्या के समाधान के लिए कई जन्मों में बहुत समय बिताया कि 'वह कौन है जो हर मृत्यु के बाद नया जन्म देता है'। अंततः जब सम्यक संबोधि जागी तब तो सब स्पष्ट हो गया कि पुनर्जन्म कोई नहीं देता। हम स्वयं अपने लिए पुनर्जन्म की तैयारी करते रहते हैं। हमारे मानस में जितने भी कर्म-संस्कारों के बीज हैं, उनमें का हर बीज अपना फल लेकर आता है। मृत्यु के समय कोई न कोई बीज प्रमुख होकर हमारे लिए एक नया जन्म खड़ा कर देता है। संबोधि से यह बात स्पष्ट हुई कि मैंने अपने पुनर्जन्म को समाप्त कर दिया है। जिन कर्म-बीजों से यह पुनर्जन्म होता है, उन्हें नष्ट कर दिया है। नया-नया घर बनाने वाले को न जाने कब से खोज रहा था। अब स्पष्ट हो गया कि मेरे भीतर एक भी पुराना कर्म-बीज नहीं रहा और नया कर्म-बीज बनाने की तृष्णा नहीं रही। अतः स्पष्ट हो गया कि मैं ही अपना घर बनाता रहा हूं, अन्य कोई मेरा नया घर बनाने वाला नहीं है। जब पुनर्जन्म के बीज समाप्त हो गये तब कहा - **'नत्थिदानि पुनब्भवोति'** - अब नया जन्म नहीं होगा। **'अयं अन्तिमा जाति'** - यह अंतिम जन्म है।

खोज पूरी हो गयी। जब तक किसी अन्य को नया जन्म देने वाला मानता था और मानता था कि वही मेरे लिए नये-नये घर बना कर तैयार रखता है, वह ईश्वर ही है। अब यह भ्रम दूर हुआ। 'मैं ही मेरा ईश्वर हूं, अन्य कोई नहीं है'।

प्रकृति ही ईश्वर है, अन्य कोई नहीं। प्रकृति के नियमों के अनुसार **'जैसा बीज वैसा फल'** सबको मिलता है। कोई चाहे कि मैं बीज तो नीम का डालूं, परंतु फल उसमें मीठे आम के लगें, तो यह असंभव है। जैसा बीज है, वैसा ही फल होगा। ऐसे ही जैसे हमारे कर्म-बीज हैं, वैसे ही कर्म-फल होंगे। मृत्यु के समय हमारे संचित कर्म-बीजों में से कोई एक निम्न कोटि का बीज प्रबल होकर आगे आता है और हमें अधोगति का फल देता है। अधोगति के फल देने वाले बीज समाप्त हो जायँ तो किसी ऊर्ध्वगति के बीज से हमें ऊर्ध्वलोक का फल मिलता है। यह प्रकृति का बँधा-बँधाया अटूट नियम है। इसमें किसी मुरारि की कृपा नहीं काम करती। बुद्ध हो जाने पर अधोगति के ही नहीं बल्कि ऊर्ध्वगति के भी सारे कर्म-बीज नष्ट हो गये, कोई फल देने वाला नहीं बचा। ऐसी अवस्था में सारे रहस्य स्पष्ट हो गये। यही बुद्ध की संबोधि थी।

बुद्ध स्वयं भी इस खोज में बहुत भटके। अनेक जन्मों में इसकी खोज करते रहे कि मरने के बाद मेरे लिए नया-नया घर बना देने वाला वह कौन है? उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा-- **'अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं'** -- अनेक जन्मों में बिना रुके संधावन करते रहा। **'गहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं'** -- घर बनाने वाले की खोज में बार-बार दुःखमय जन्म लेता रहा। **'गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि'**-- हे गृहकारक! मैंने तुझे देख लिया है। अब तू मेरे लिए कोई घर नहीं बना सकता!

'सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खतं।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा॥'

-- घर बनाने की सारी कड़ियां भग्न हो गयीं, घर का शिखर विशृंखलित हो गया यानी इस पुनर्जन्म का रहस्य समझ में आ गया। हे घर बनाने वाले! अब तू मेरे लिए नया घर नहीं बना सकता। क्योंकि मैंने अपने भीतर कर्म-संस्कारों के सारे बीज विपश्यना द्वारा समाप्त कर लिये और अब तृष्णा बची ही नहीं, जिससे कि नये संस्कार बनें। इसके बाद न पुराने शेष रहे और न नये बन सकेंगे। कर्म-बीज ही नहीं रहा तो कर्म-फल कहां से आयेगा?

इस मुक्त-अवस्था में सारा रहस्य स्पष्ट हो गया। अब किसी मुरारि से प्रार्थना करने की जरूरत नहीं जो किसी को भव-संसरण से मुक्त कर दे। अब यह स्पष्ट हो गया कि -- **'अपनी मुक्ति अपने हाथ'**। जब सारे पुरातन कर्म-संस्कार विपश्यना द्वारा नष्ट कर दिये जायँ और नये संस्कार बनाने वाली तृष्णा का नामोनिशान नहीं रहे, ऐसी अवस्था में पुनर्जन्म का कोई अर्थ ही नहीं। अतः ईश्वर के नाम की कल्पना और उससे की गई प्रार्थना दोनों ही निरर्थक हैं, बेमानी हैं।

जब भगवान बुद्ध की यह वाणी प्रसिद्ध होने लगी तो पुरोहितों की धरती हिल गयी। अब तक वे किसी परमात्मा की प्रार्थना करना सिखाते थे, जो कि उन्हें भव-संसरण से मुक्त कर दे। परंतु बुद्ध के अनुसार ऐसा न तो परमात्मा है, न अन्य कोई उन्हें भव-संसरण से मुक्त कर सकता है। बुद्ध की इस घोषणा ने पुरोहितों की धरती हिला दी। क्या करते? बड़े-बड़े यज्ञ स्थापित करके अपने लिए अपार धन प्राप्त करने की योजनाएं समाप्त हो गयीं। जब ईश्वर ही नहीं है तो कोई क्यों उनसे यज्ञ करायेगा और क्यों बड़ी दान-दक्षिणा देगा? तब उन्होंने एक पासा फेंका और एक चाल चली। बुद्ध को ही ईश्वर बना दिया। यानी बुद्ध को ईश्वर का अवतार घोषित कर दिया। इस सफेद झूठ के कारण अनेक लोग सच्चाई से विचलित हो गये। परंतु जो बचे रहे, वे इस भ्रम में नहीं उलझ पाये।

बुद्ध-विरोधी लोगों में इस बात का दुःख रहा कि सम्यक सम्बुद्ध के इतने स्पष्ट विवेचन द्वारा यह सिद्ध हुआ कि पुनर्जन्म देने वाला कोई ईश्वर नहीं है। यह प्रकृति ही है जो अपने नियमों के अनुसार काम करती है। उन्हें इस बात का दुःख रहा कि बुद्ध को ईश्वर का अवतार बता कर ईश्वरवाद को कायम रखने का जो मिथ्या प्रयत्न किया जा रहा था, उसका उन्हें कोई मनोवांछित परिणाम नहीं मिला। जो लोग समझदार थे, उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली।

कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती से इस पर चर्चा हुई। वे उदार वृत्ति के संत पुरुष हैं। उन्होंने यह भूल तुरंत स्वीकार कर ली और मेरे साथ जो समझौता

किया गया उसमें पहली बात यही रखी गयी कि बुद्ध किसी ईश्वर के अवतार नहीं थे। उनकी उदार दृष्टि और वास्तविकता को समझ कर अन्य तीनों पीठासीन जगद्गुरु शंकराचार्यों - श्री भारती तीर्थ महास्वामी, शृंगेरी पीठाधीश्वर, श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाराज, द्वारका शारदा पीठाधीश्वर और श्री विद्यानंद गिरि महामंडलेश्वर, कैलास आश्रम पीठाधीश्वर ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया।

इतना होने पर भी किसी के मन में यह भ्रम रहे कि बुद्ध ईश्वर के अवतार थे, तो यह झूठी मान्यता कहां तक चलेगी?

बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को ही नकार दिया तो अब पूजा करने वाले किसकी पूजा करेंगे? बुद्ध स्वयं अपने आपको ईश्वर मानने के सर्वथा विरुद्ध थे। बुद्ध ने एक बात अपने शिष्यों को बार-बार दोहरायी कि मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें स्वयं अपना जीवन सुधारना है। मैं मुक्तिदाता नहीं हूं, केवल मार्ग-आख्याता हूं। मैंने मार्ग बता दिया। अब उस पर चलना तुम्हारा काम है। फिर भविष्य के लिए तुम्हारे द्वारा किये गये अच्छे काम ही अच्छे फल लायेंगे। काम तुम्हें करना है। मैं तो मार्ग आख्यात करने वाला हूं -- **'तुम्हेहि किच्चमातप्पं, अक्खातारो तथागता'**। बुद्ध की इस घोषणा ने बुद्ध-विरोधी सभी पुरोहितों को हिला दिया।

अगर ईश्वर की प्रार्थना नहीं करें तो अन्य छोटे-मोटे देवी-देवताओं की ही प्रार्थना करके अपनी इच्छा पूर्ति कर लें। परंतु जब स्वयं काम करना है और जब हमारी मनचाही कर देने वाला कोई है ही नहीं, तब हम किसकी पूजा करें, किसकी प्रार्थना करें? जब बुद्ध ने कह दिया कि तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति कोई दूसरा नहीं कर सकेगा। भव-संसरण से छुटकारा पाने के लिए तुम्हें स्वयं विपश्यना द्वारा अपने अधोगति और ऊर्ध्वगति के सारे कर्म-बीजों को समाप्त करना होगा। आगे नया कर्म-बीज बनाओगे नहीं तो भव-संसरण से स्वतः मुक्ति मिल जायगी। इस घोषणा से छोटे-बड़े सभी पुरोहितों की धरती हिल गयी।

'न कोई ईश्वर है जो हमें मुक्त कर देगा और न छोटे-मोटे देवी-देवता हैं, जो हमारी इच्छाओं की पूर्ति कर देंगे'-- इन दो वक्तव्यों के कारण बुद्ध को घोर नास्तिक ठहराया गया। फिर भी उनकी शिक्षा फैलती ही गयी, क्योंकि वह सार्वजनीन शिक्षा थी। वह कोई संप्रदाय नहीं था, क्योंकि बुद्ध ने कोई संप्रदाय स्थापित नहीं किया। बुद्ध ने धर्म सिखाया और जो सिखाया, वह सार्वजनीन था, सबके लिए समान रूप से उपकारी था। सदाचार का जीवन जीना, मन को बिना किसी बाहरी आलंबन के एकाग्र करना और भीतर जो कुछ महसूस हो रहा है, उस सत्य को ही समता के भाव से देखना - यह मार्ग सबके लिए अनुकूल था। और फैलता ही गया। क्योंकि सच्चाई तो सच्चाई है। बुद्ध को नास्तिक कह देने से सांसारिक सच्चाई झूठी नहीं हो सकती।

अब इस जिज्ञासा की पूर्ति हो गयी कि अपना घर बनाने के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। कोई दूसरा हमारे लिए नया घर नहीं बनाता। मिथ्यादृष्टि दूर हुई, सही ज्ञान जागा। बुद्ध की शिक्षा का यह मकसद कि हर व्यक्ति अपने भविष्य का स्वयं जिम्मेदार है पूरा हुआ। जब तक कर्म-बीज हैं, तब तक नया-नया घर बनता रहेगा। विपश्यना द्वारा सारे कर्म-बीज समाप्त कर लें तो नया घर नहीं बन सकेगा। इसके पहले अपने ईष्टदेव से प्रार्थना करता रहा कि मेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह को दूर करो, इनसे छुटकारा दिलाओ। रोज-रोज गीली आंखों से प्रार्थना करता रहा, परंतु कोई देवी-देवता मेरे लिए कुछ नहीं कर सका। अब विपश्यना ने मेरे मन की मुराद पूरी की। एक बड़ी जिज्ञासा पूरी हुई। मेरा कल्याण हुआ। इसी में सबका कल्याण समाया हुआ है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

मित्र उपक्रम धम्मसेवा

पूज्य गुरुदेव की दूरदृष्टि इस बात पर गयी कि सभी स्कूलों में आनापान साधना बचपन से ही सिखायी जाय। इसके लिए आवश्यक था कि स्कूल के अध्यापक भी विपश्यना करें ताकि उन्हें नियमित रूप से अभ्यास कर सकने में सहायता कर सकें। तदर्थ महाराष्ट्र सरकार ने अपने सभी स्कूलों में एक जी.आर. निकाल कर अध्यापकों को विपश्यना में जाने का प्रोत्साहन दिया। विपश्यना विशोधन विन्यास और महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से **मित्र उपक्रम** की स्थापना की गयी और इसके संचालन के लिए अनेक सहायक आचार्य, सरकारी अधिकारी और धर्मसेवक ने मिल कर काम को आगे बढ़ाया। इस प्रकार अब महाराष्ट्र में लगभग ढाई करोड़ विद्यार्थियों को आनापान साधना सिखायी जायगी।

गत वर्ष लगभग २,८०० स्कूल के अध्यापकों ने विपश्यना के १०-दिवसीय शिविरों में भाग लिया और इस वर्ष लगभग १९,००० अध्यापक शिविरों में भाग लेने वाले हैं। ये शिविर **अ-केंद्रीय** स्थानों पर लगाये जायँगे, जिनके सुचारुरूप से संचालन के लिए बहुत बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की आवश्यकता है। कृपया धर्मसेवा के लिए अपने नाम इन फोन नंबरों-- 9930796064, 9323142310 पर या ईमेल से लिख भेजें-- ईमेल mitraupakram@gmail.com

website: http://www.mitraupakram.org/

आवेदन-पत्र मिलने पर धर्मसेवकों को उनके लिए विशेष कार्यसूची व अन्य विवरण समझाये जायँगे ताकि उनकी सेवा का अधिक से अधिक लाभ लोगों को प्राप्त हो सके और सही माने में **बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय** सेवा हो। जो **स. आचार्य** इन शिविरों में सेवा देना चाहते हैं वे कृपया श्री ऋषिकांत मेहता से 09408283018 पर संपर्क करें। धन्यवाद!

बुद्ध-शिक्षा और विपश्यना पर एक वर्षीय पालि डिप्लोमा कोर्स

विपश्यना विशोधन विन्यास (VRI) एवं मुंबई विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्ष १३-१४ के लिए **अंग्रेजी माध्यम** से **पालि डिप्लोमा कोर्स** निर्धारित किया गया है। **स्थल-** 'ज्ञानेश्वर भवन', दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्या नगरी परिसर, कालीना, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-४०००९८. **आवेदन-पत्र** उक्त स्थल से १ से १५ जुलाई, सोम से शुक्र तक, ११-३० से २-३० बजे के बीच. **कोर्स-अवधि** २०-७-१३ से ३१-३-२०१४ तक. **समय--** अपराह्न २-३० से सायं ६-३० बजे तक; **योग्यता--** कम से कम १२वीं उत्तीर्ण छात्रों के लिए, जिन्हें दिवाली अवकाश में विपश्यना शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा. **अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–** १). डॉ शारदा संघवी - फोन: ०२२-२३०९५४१३, मो. ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः**s_sanghvi@hotmail.com; २) श्रीमती लाम्बा : ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुलकर: ०९८२०५८३४४०.

मंगल मृत्यु

मैस्साचुसेट्स, अमेरिका की कु. लेसली जेनिंग्स वरिष्ठ सहायक आचार्या का निधन १४ मई, २०१३ को बहुत शांत वातावरण में हुआ। उसने धर्म की बहुत सेवा की। उसकी बहन और कुछ साधक साथ में साधना कर रहे थे और पूज्य गुरुदेव की वंदना के समय शरण-गमन पूरा होते ही उसने अंतिम सांस लिया। मंगल कामना करते हैं कि सद्धर्म से उसका संपर्क बना रहे।

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र-- धम्म जलगांव

जलगांव-औरंगाबाद रोड पर, १२ किमी. दूर उमला गांव में नये केंद्र का निर्माणकार्य आरंभ हो चुका है। इस पुण्यकार्य में भागीदार होने के इच्छुक साधक संपर्क करें-- **जलगांव विपश्यना संस्था, जलगांव,** स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, जिल्हा पेठ शाखा, चालू खाता क्रमांक- 32828343859, IFSC code: SBIN0011515, Email: <hiwarkaranand@gmail.com>

धम्म मालवा, इंदौर के निर्माणकार्य का विस्तार

विपश्यना केंद्र पर दूसरे चरण का कार्य आरंभ हुआ है। इसमें ३० साधकों के निवास, पाथ-वे, भोजन-कक्ष, पाकशाला आदि आंतरिक कार्यों को पूरा करना है। इस पुण्यकार्य में भागीदार होने के इच्छुक साधक-साधिका संपर्क करें--

इंदौर विपश्यना इंटरनेशनल फाउंडेशन, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पी.वाई. रोड ब्रांच, खाता क्रमांक 53005457719, IFSC code: SBIN0030015. (८०-जी आयकर की छूट है।) **संपर्क--** श्री राजू सेठी, Mob. 9826036141.

निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र-- 'धम्म हितकारी'

हरियाणा के रोहतक शहर से १०-किमी. की दूरी पर लाहली गांव में विपश्यना केंद्र का निर्माणकार्य प्रगति पर है। इस पुण्यकार्य में भागीदार होने के इच्छुक साधक-साधिका संपर्क करें-- **विपश्यना ध्यान समिति**, द्वारा- जनसेवा संस्थान, भिवानी रोड, रोहतक. (८०-जी आयकर की छूट है।) **Andhara Bank** A/c 113410011000218 (IFS Code: ANDB0001134) or **Oriental Bank** A/c. 07952191038955 (IFS Code: ORDC0100795)
Email: vipassanarohtak@gmail.com;

-- बैंकों में सीधे पैसे जमा करने पर कृपया रसीद के लिए सूचित अवश्य करें।

धम्मचक्क पवत्तन दिवस के अवसर पर
पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

21 जुलाई, 2013, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है। कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें।** कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, (फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री प्रकाश एवं श्रीमती शुभांगी बोरसे; धुळे, जलगांव एवं नंदुरबार के समन्वयक के रूप में क्षेत्रीय आचार्य की सेवा

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती प्रेमा सारडा, औरंगाबाद
२. श्री रमेश जैन, औरंगाबाद
३. श्री पुंडलीक अहिरे, कल्याण

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री रामचंद्र सिन्हा, मुजफ्फरपुर
२. श्री अनिरुद्ध कोचे, रायपुर
3. Mr. Anupong Thepwarin, Thailand
4-5. Mr. Chong-Kwang Tay & Mrs. Hoy Yang Pang, Malaysia
6. Mrs. Motoko Sunaga, Japan
7. Mr. Etsuo Takeuchi, Japan
8. Ms. Nin Thong-Innate, Thailand
9. Mrs. Radhi Raja, Singapore

दोहे धर्म के

शुद्ध धर्मका शांति पथ, सम्प्रदाय से दूर।
शुद्ध धर्मकी साधना, मंगल से भरपूर॥
सत्य धर्म को, कल्पना दूषित देय बनाय।
एक बूंद कांजी गिरे, मन भर पय फट जाय॥
रूप शब्द रस गंध में, सतत सघनता होय।
विपश्यना से बींध लें, तो ही विघटन होय॥
धर्म सरित निर्मल रहे, मैल न मिश्रित होय।
जन जन का होवे भला, जन जन मंगल होय॥
निर्मल निर्मल धर्म का, मंगल ही फल होय।
बंधन टूटें पाप के, मुक्ति दुखों से होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सतगुरु की संगत मिली, मिल्यो धरम को सार।
सम्प्रदाय कै बोझको, उतरयो सिर सूं भार॥
सतगुरु की किरपा हुई, उबरत लगी न देर।
दुख दालद सारा मिट्या, मिल्यो रतन को ढेर॥
जदि सतगुरु तू राजपथ, देतो नहीं दिखाय।
तो जीवन भर भटकतो, आंधी गलियां मांय॥
तड़पत तड़पत प्यास सूं, प्राण जावता छूट।
जदि सतगुरु देतो नहीं, इमरत रस की घूंट॥
अहो भाग्य! गुरुदेव जू, प्रग्या दई जगाय।
दरसन बाद विबाद की, जकड़न दई छुड़ाय॥
धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557**, **वैशाख पूर्णिमा, 25 मई, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org